

मय मानव जीवन की सबसे रहस्यमय अवधारणा है। यह वह आयाम है, जो हर क्षण हमारे अस्तित्व को आगे बढ़ाता है, परंतु जिसे हम रोक नहीं सकते। सभ्यता की शुरूआत से ही मनुष्य यह समझाने की कोशिश करता आया है कि क्या समय की गति को नियंत्रित किया जा सकता है, क्या अतीत या भविष्य में यात्रा संभव है? समय यात्रा या टाइम ट्रैवल का विचार इसी जिज्ञासा से जन्मा और आज यह कल्पना से निकलकर वैज्ञानिक शोध का गंभीर विषय बन चुका है। हाल के वर्षों में वैज्ञानिकों ने समय और अंतरिक्ष को समझाने के लिए कई नई खोजें की हैं। ऑस्ट्रिया की एकेडमी ऑफ साइंसेज और विद्यना विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों ने क्वांटम



राजेश श्रीनेत

वरिष्ठ पत्रकार

स्थिर प्रयोग में एक फोटॉन को उसकी प्रारंभिक अवस्था में लौटाने में सफलता पाई। यह मानवीय स्तर की समय यात्रा तो नहीं है, लेकिन यह दर्शाता है कि सूक्ष्म कणों की दुनिया में समय की दिशा बदली जा सकती है। इसी तरह, एटम इंटरफेरोमीटर का उपयोग करते हुए वैज्ञानिक गुरुत्वाकर्षण के कारण होने वाले सूक्ष्म समय विस्तार को मापने की नई विधि विकसित कर रहे हैं। यह प्रयोग भविष्य में ऐसी घटियां बनाने का आधार बन सकता है, जो ब्रह्मांडीय स्तर पर भी समय की सटीकता को माप सकें।



जब विज्ञान ने दिमाग को काबू करने की कोशिश की

मैट्रिड विश्वविद्यालय के स्नातक जोस डेलगाडो (1915-2011) को येल विश्वविद्यालय में भले ही एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर

रोचक किस्या

वेज्जान विभाग में उनका साध बेहद अजीब था, क्योंकि यह कुल मिलाकर मन पर नियंत्रण से संबंधित था। हम मजाक नहीं कर रहे हैं: 1950 और 60 के दशक में येल में रहते हुए, डेलगाडो ने प्राइमेट्स के मस्तिष्क में इलेक्ट्रोड इम्प्लांट लगाए और एक रिमोट कंट्रोल का इस्तेमाल करके रेडियो प्रीविवेसी जारी की जिससे जानवर जटिल गतिविधियां कर पाए। बाद में, उन्होंने एक बैल के मस्तिष्क में एक इम्प्लांट लगाया

और उस जानवर के साथ रिंग में उतरे और अपने ट्रांसमीटर का इस्तेमाल करके उसे चार्ज होने से पहले ही रोक दिया। शायद सबसे ज्यादा चिंताजनक बात यह थी कि डेलगाडो ने कम से कम 25 लोगों को तार से जोड़ा था। व्यावहारिक रूप से, उनके उपकरण का असर सिर्फ लोगों की आक्रामकता पर था, लेकिन वे मन पर नियंत्रण पाने के लिए लगातार प्रयास करते रहे, एक बार उन्होंने डरावने अंदाज में कहा था, “हमें मस्तिष्क को इलेक्ट्रॉनिक रूप से नियंत्रित करना होगा। किसी दिन सेनाओं और जनरलों को मस्तिष्क के विद्युतीय उत्तेजना से नियंत्रित किया जाएगा।”



तीन हजार तारों का भरापूरा परिवार सप्तऋषि तारामंडल

जानकारी

तरिक्ष के तारामंडलों में सर्वाधिक लोकप्रिय सप्तऋषि रामंडल का अस्तित्व 12.7 करोड़ साल पुराना है। तत्त्रष्णि तारामंडल तीन हजार तारों का भरा पूरा परिवार अमेरिका चिंगह गनितर्थियों

अमरका रथ्यत यूनिवासट।
एक नॉर्थ कैरोलिना के वैज्ञानिकों
नए शोध में इसका खुलासा
आ है। सप्तऋषि तारामंडल को
गोएड्स (सेवन सिस्टर्स) भी कहा
ता है। यह तारा मंडल हिंदू पुराणों
खास रथान रखता है, तो दुनिया
इससे अधिक लोकप्रिय कोई
परा तारामंडल नहीं है। सप्तऋषि
सात तारों को बख्बी नगन आंखों
देखा जा सकता है। इसके किस्मे और चर्चे दुनियाभर में
देशों से मशहूर हैं। मगर नई खोज ने इस तारामंडल की
दुरार्थ में झांकने का प्रयास किया और नई जानकारियां
दर्तिकरी हैं।



बहुल चंद्र



पूर्व में इस मंडल में माना जाता था कि सप्तऋषि में सात तारों के साथ एक हजार तारों का विशाल समूह है, मगर नई खोज के अनुसार इस तारा मंडल में तीन हजार तारे शामिल हैं, जो एक ही समय में और एक ही गैस के बादलों से इनका निर्माण हुआ है। यह दो हजार प्रकाशवर्ष के दायरे में फैले हुए हैं। तारों की इस अजूबी दुनिया को दूरबीन से बखूबी देखा जा सकता है। अब यह तरे एक दूसरे से बहुत दूर-दूर बिखर चुके हैं। खोजकर्ता वैज्ञानिकों का कहना है कि स्वच्छ तारा समूह एक स्थान में स्थायी नहीं होते हैं। सप्तऋषि मंडल में कुछ मिलियन सालों में आकाश गंगा के गुरुत्वाकरण प्रभाव और पास के बादलों से टक्कर के कारण तारे धीरे-धीरे एक-दूसरे से दूर जा रहे हैं। यानी बिखरने लगे हैं। अगले कई लाखों साल बाद इसके सारों चमकीले खबरमरु

सप्तऋषि मंडल का धार्मिक आध्यात्मिक व वैदिक महत्व

हिंदू धर्म और ज्योतिषशास्त्र में सप्तऋषि तारा मंडल का बहुत ऊंचा धार्मिक, आध्यात्मिक और वैदिक महत्व है और पवित्र माना जाता है। सप्तऋषि तारा मंडल को सात महान ऋषियों का आकाशीय रूप माना जाता है, जिनमें कश्यप, अंति, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, जमदग्नि व भारद्वाज शामिल हैं। ये सात ऋषि वेदों के द्रष्टा हैं और ब्रह्मज्ञान के संरक्षक माने जाते हैं।

वैज्ञानिकों के अध्ययन का बड़ा केंद्र

आर्यभट्ट प्रेक्षण विज्ञान शोध संस्थान (एरीज) के तारों के वरिष्ठ खगोल वैज्ञानिक डॉ. शशीभूषण पांडे कहते हैं कि संपत्रिष्ठ तारामंडल खगोल वैज्ञानिकों के अध्ययन का बड़ा केंद्र है। समय-समय पर वैज्ञानिक इस पर अध्ययन करते आ रहे हैं। नया अध्ययन बेहत दिलचस्प है। इस तारामंडल एवं पर्यावरण में जौल वर्तमान विभिन्न विद्याएँ

जंगल की दुनिया गोल्डन लंगूर: असम-भूटान की सीमा का सूनहरा रत्न



भारत के उत्तर-पूर्वी राज्य असम और पड़ासी देश भूटान की सीमा पर बसे घने, शांत और जैव-विविधता से समृद्ध जंगलों में एक अनोखा जीव पाया जाता है—गोल्डन लंगूर। अपनी चमकीली सुनहरी फर और सौम्य व्यवहार के कारण यह बंदर दुनिया की सबसे रहस्यमयी और मनमोहक प्रजातियों में गिना जाता है। हैरानी की बात यह है कि इतना सुंदर और दुर्लभ जीव वैज्ञानिकों की नजर में पहली बार 1950 में आया। उससे पहले तक स्थानीय लोग इसके बारे में जानते तो थे, लेकिन आधुनिक विज्ञान को इसकी उपस्थिति की कोई स्पष्ट जानकारी नहीं थी। गोल्डन लंगूर अपनी लंबी रेशमी पंछी, नरम सुनहरी से लेकर क्रीम रंग तक फैली फर और अभियक्तिपूर्ण चहरे की वजह से तुरंत ध्यान आकर्षित करता है। ये आमतौर पर 40 से 50 कीड़ों, फलों, पत्तियों और फूलों पर निर्भर रहते हैं। इनका अधिकांश जीवन ऊचे-ऊचे पेड़ों पर बीतता है, जहां ये छोटे समूहों में रहते हुए शांतिपूर्वक भोजन और आश्रय खोजते हैं।

इनकी सबसे बड़ी खासियत यह है कि ये 'एंडेमिक' प्रजाति हैं, यानी दुनिया में केवल एक सीमित क्षेत्र असम के पश्चिमी हिस्से और भूटान के दक्षिणी इलाकों में ही पाए जाते हैं। यही सीमित आवास इन्हें और भी संवेदनशील बनाता है। जंगलों का कटाव, मानव बसियों का फैलाव, सड़क निर्माण और कृषि गतिविधियों के कारण इनका प्राकृतिक घर लगातार सिकुड़ता जा रहा है। इसी बजह से गोल्डन लंगूर आज संकटग्रस्त श्रेणी में शामिल है और इनका संरक्षण बेहद आवश्यक हो गया है। सरकारों, स्थानीय समुदायों और संरक्षण संगठनों द्वारा इनके आवास को बचाने, जागरूकता बढ़ाने और वैज्ञानिक अध्ययन को प्रोत्साहित करने की लगातार कोशिशें हो रही हैं। गोल्डन लंगूर न केवल प्राकृतिक विरासत का अनमोल हिस्सा है, बल्कि यह भी याट द्विलाले हैं कि पश्चीम पूर्व मौजूद हर प्रजाति कितनी कीमती